2 - मोहयाल जातियों और बिरादरी का गठन

प्राचीन इतिहास पुस्तकों में "मोहयाल" शब्द नहीं है. भीमदेव, जयपाल, डाहर – जिन शासकों को हम अपने पूर्वज मानते हैं वह अपने नाम के साथ दत्त, वैद, छिब्बर आदि जाति नहीं लिखते थे. समकालीन इतिहासकारों के अनुसार वह सब ब्राह्मण अवश्य थे. आजकल के नामों वाली मोहयाल जातियां, और मोहयाल जाति-समूह (बिरादरी) कब संगठित हुए, इन प्रश्नों का हम यहां उत्तर देंगे.

हिन्दू समाज आदिकाल से केवल चार वर्णों में विभाजित था - ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र. भागवत गीता में भगवान कृष्ण स्वयं अर्जुन को उसके क्षत्रीय धर्म का पालन करने का उपदेश देते हैं. (XVIII - 42-45). मनु स्मृति में लिखा है यही चार दैवी वर्ण हैं और पांचवां कोई नहीं. सभी को अपने वर्ण में ही विवाह करने का परामर्श दिया है. (I - 31, 287; III - 5; X - 4). हर एक वर्ण अपने में एक इकाई था और उसके भीतर कोइ वर्गीकरण (जाति या बिरादरी आदि) नहीं था. कोई भी ब्राह्मण (अपना गोत्र छोड़ कर) किसी भी दूसरे ब्राह्मण परिवार में विवाह कर सकता था. कौटिल्य के "अर्थ शास्त्र" (चौथी शताब्दी) में भी इन चार वर्णों के व्यवसाय की विस्तृत व्याख्या है. इसके पश्चात जो यूनानी और चीनी यात्री भारत आये उन्होंने भी इन चार वर्णों का उल्लेख किया है.

1000 ईo में इस्लाम दर्रा खयबर पार कर के भारत की मुख्य भूमि पर पहुंचा. महमूद गज़्नवी के समय में अल बैरूनी नाम से विख्यात एक दार्शनिक भारत आया. उसने अपनी पुस्तक "किताब तारीख अल हिन्द" में बड़े आधिकारिक रूप से वर्णों के विषय में एक अलग अध्याय लिखा है और कहा है कि आदि काल से भारत में यह चार ही हैं. (IX, पृ. 99-104). **इन उदाहरणों से सिद्ध हो जाता है कि, इस्लाम के आने से पूर्व, हिंदुओं में चार ही सामाजिक श्रेणियां थीं जिनको वर्ण कहा जाता था.**

इस इस्लामी झंझावत के आने पर देश में खलबली मच गयी. तब तक भारत को सिंध और अफ़ग़ानिस्तान में इस्लाम धर्म का बहुत अनुभव हो चुका था. इस नए धर्म में समानता और समरसता की कोई सम्भावना नही थी. देश में राजनीतिक अराजकता के साथ धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएं और परम्पराएं भी सुरक्षित नहीं थीं. इस विदेशी बर्बर शक्ति से बचाव के लिए जनजीवन में कई फेर बदल कियॅे जा रहे थे. सामाजिक सुरक्षा के लिए आवश्यक था कि हिन्दू "रोटी और बेटी के सम्बन्ध" विधर्मियों से न जोड़ें.

उस समय हिंदुओं के चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र), जातियों में बट गए और हर जाति ने अपनी स्पष्ट पहचान के लिए अपना एक नाम चुन लिया. परन्तु इस नई जाति में कौन थे? ऊपर हम ने बताया है कि हर एक कबीले की अपनी पहचान उसका गोत्र और शाखा थी. अब क्या हुआ कि पराशर गोत्र और माध्यन्दिनी शाखा वाला वंश "बाली" जाति (पंजाबी – ज़ात) के नाम से पहचाना जाने लगा. भृगु गोत्र और माध्यन्दिनी शाखा वाला कबीला "छिब्बर" कहलाने लगा. कश्यप गोत्र और माध्यन्दिनी शाखा वाला वंश अब "मोहन" जाति हो गया और उस जाति का हर व्यक्ति, अपनी

तात्कालिक पहचान के लिए, अपने नाम के साथ ही "मोहन" भी जोड़ने लगा. इसी प्रकार देश भर में सभी हिन्दू अपनी स्पष्ट पहचान के लिए नाम के साथ अपनी जाति लगाने लगे.

प्राचीन पद्धिति के अनुसार कोई भी व्यक्ति (सगोत्र छोड़ कर) अपने ही वर्ण के किसी भी और परिवार में विवाह कर सकता था. परन्तु उस अराजकता और उथल पुथल में अनजाने लोगों के वर्ण का कैसे पता चले? इसके लिए, अपने ही वर्ण की, लगभग एक जैसे व्यवसाय वाली, जानी पहचानी, जातियों ने मिलकर आपस में ही विवाह करने के लिए जाति-समूह या "बिरादरियां" बना लीं – जैसे, खुखराइन, त्यागी, भूमिहर आदि. उसी काल खंड, 1190 ई में, हमारे पंजाब के शस्त्रधारी, दान न लेने वाले, सात ब्राह्मण क़बीलों ने भी बाली, भीमवाल, छिब्बर, दत्त , लौ, मोहन और वैद नामों से जातियां बना लीं और अपने जाति-समूह (बिरादरी) को (मूहि (भूमि)+ आल =) "मूहियाल" की संज्ञा दी.

इस प्रकार बारहवीं शताब्दी में, मोहयाल जातियों और बिरादरी का गठन हुआ. शेष सभी जातियों और बिरादरियों का गठन भी उसी काल खंड में, भारत में इस्लाम के उदय के पश्चात, हुआ.

किसी भी नई जानकारी को एकदम मानने में कठिनाई होती है. बारहवीं शताब्दी में हिन्दू समाज में जाति और बिरादरी के गठन की बात हम ने विश्वसनीय और प्रमाणिक स्रोतों से ली है. कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

"राष्ट्र का अनेक पृथक जातियों में विघटन इस्लाम द्वारा भारत पर विजय के पश्चात हुआ". रोमेश चंद्र दत (A History of Civilisation in Ancient India – Based on Sanskrit Literature, Vol. II, p. 214, Mymensing, 1890). "मुस्लिम विजय के पश्चात ही स्पष्ट जातियां बनीं." ए. के. मजूमदार (Early Hindu India: A Dynastic Study, Vol. III, p. 820 Dacca, 1917) *"जिस काल (1030-1194) का हम सर्वेक्षण कर रहे हैं उसके अंत की ओर ही हम देखते हैं कि ब्राह्मण एक ही इकाई नहीं रहे"*. भक्त प्रसाद मजूमदार (Socio-Economic History of Northern India (1030-1194), p.93, Calcutta, 1960.) इसी प्रकार सी. वी. वैद्य, वासुदेव उपाध्याय, विभूति भूषण मिश्र आदि कई और भी विख्यात इतिहासकार हैं, जिन्होंने यही मत प्रतिपादित किया है. दुर्भाग्यवश, इतिहास के पठन-पाठन की पुस्तकों में इसकी जानकारी नहीं है. इसके अपने अलग कारण हैं. पश्चिमी विशेषज्ञों ने, फिर उनके आधार पर अनेक भारतीय इतिहासकारों ने, इस सीधे साधे विषय को बुरी तरह उलझा दिया है. बहुत सी भ्रम की स्थिति इसलिए भी है कि हिन्दू समाज के कई प्रकार के वर्गों – वर्ण, जाति, बिरादरी, धर्म आधारित राजनीतिक-जाति-समूह आदि – सब के लिए अंग्रेज़ी में केवल एक ही शब्द है: caste. मोहयाल इतिहास की हमारी पुस्तक AFGHANISTAN REVISITED (पृ.197-190) में इस विषय की व्याख्या के पश्चात, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के "रिसर्च जर्नल" इतिहास दर्पण Vol. XIX, (I), 2014) में "Origin of Caste System and Mohyal Brahmans" शीर्षक से एक विस्तृत लेख भी छपवाया गया. Google Search में एक लेख डाला गया: ORIGIN OF CASTE IN HINDU SOCIETY

https://sites.google.com/site/originofcastesinhindusociety/home/origin

इस में कोई संशय नहीं होना चाहिए कि पूरे हिन्दू समाज में वर्णों के विघटन और जाति/बिरादरी के ढाँचे के गठन के समान ही, मोहयाल जातियों और बिरादरी की स्थापना भी इस्लाम द्वारा भारत पर विजय के पश्चात ही हुई.

.